शोध आलेख : नीरजा माधव के उपन्यास तेभ्यःस्वधा में विभाजन की पीड़ा

सार

भारत और पाकिस्तान के विभाजन की घटना ने व्यापक रूप से बड़े सांप्रदायिक हिंसा को जन्म दिया। इस हिंसा के अनेक रूप थे जिनमें धार्मिक आधार पर लाखों लोगों का जीवन संकट में पड़ गया। विशेष रूप से स्त्रियों की स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई। उन्हें अपहरण किया गया और उनके साथ अमानवीय दुर्व्यवहार किया गया। विभाजन ने न केवल परिवारों को तोड़ा बल्कि समाज में स्थायी घाव भी छोड़े। डॉ नीरजा माधव के उपन्यास "तेभ्यः स्वधा" ने इस त्रासदी को एक महिला के दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है जो विपरीत परिस्थितियों में भी मानवता और करुणा की शक्ति को दर्शाता है। यह उपन्यास कश्मीर और विभाजन के दीर्घकालिक प्रभावों पर भी प्रकाश डालता है। इसमें यह दिखाया गया है कि विभाजन के बाद भी मानवता और करुणा की शक्ति से ही समाज का पुनर्निर्माण संभव है। लेखिका उन अनकही पीड़ाओं को उजागर करती हैं।

बीज शब्द

स्वतंत्रता, आक्रमण, सांप्रदायिकता, दंगा, अपहरण, त्रासदी,मानवता, संस्कृति, हिंसा, पीड़ा।

विभाजन की पीड़ा: 'तेभ्यः स्वधा' के माध्यम से मानवता की कथा

भारत और पाकिस्तान का विभाजन एक ऐसी दुखद घटना थी जिसने न केवल लाखों लोगों के जीवन को प्रभावित किया बल्कि साहित्यकारों को भी गहरे प्रभाव में डाला। इस त्रासदी को लेखकों ने अपने साहित्य के माध्यम से जीवित रखा है और इसे समझाने की कोशिश की है। डॉ. नीरजा माधव के उपन्यास “तेभ्यः स्वधा” में विभाजन के अमानवीय पहलुओं मानवता और करुणा को केंद्रित किया गया है। इस उपन्यास में एक हिंदू स्त्री के माध्यम से विभाजन की यातनाएँ और दु:ख-दर्द को उजागर किया गया है।

15 अगस्त 1947 को भारत ने आज़ादी की पहली सांस ली। लेकिन यह अड़तालीस घंटों के अंदर ही साम्प्रदायिक दंगों में बदल गया। भारत और पाकिस्तान दो अलग राष्ट्रों में विभाजित हो गए जिनका कारण धार्मिक भेदभाव और राष्ट्रों की अलग-अलग पहचान की चाहत थी। विभाजन एक बढ़ते धार्मिक तनाव और पृथक राष्ट्रों के गठन की आवश्यकता का परिणाम था।

एक शनदार वाकया बताया कि "हिंदुस्तान की आजादी का मुश्किल सवाल बातचीत और समझौते के जरिये हल हो गया, खून-खराबा और लड़ाई के जरिये नहीं।" पृ199

विभाजन की त्रासदी और मीना का संघर्ष

बनारस में जन्मी मीना एम.ए. की शिक्षा प्राप्त करने के लिए रावलपिंडी पहुँची थीं। लेकिन 1947 के अक्टूबर महीने में जब पाकिस्तान की सेना ने भारत पर आक्रमण किया तब से उनकी जीवन संघर्षों और त्रासदी से भर गई। कबायली हमलावरों के आतंक से घिरे क्षेत्रों में मीना का परिवार भी फंसा हुआ था। राजौरी घाटी मे उनके गाँव के लोग एक गुफा में शिविर बनाकर शरण ले रहे थे। उस रात की भयावह घटना को स्मरण करना भी हृदयविदारक है। कबायलियों ने पूरे गाँव का निर्मम नरसंहार किया और मीना को बंदी बना लिया।

हमलावर साफीखान ने न केवल मीना का अपहरण किया बल्कि उसका नाम बदलकर "अमीना" रख दिया। उसने मीना पर बलात्कार जैसा अमानवीय अत्याचार किया और बाद में जबरन विवाह कर लिया। इस विवाह के बाद भी मीना को घरेलू हिंसा और अपमान का सामना करना पड़ा। अपनी कठिनाइयों और यातनाओं के बीच मीना ने अपने बच्चे का पालन-पोषण करते हुए हर चुनौती का सामना किया। साफीखान की मृत्यु के बाद मीना अपने पुत्र के साथ भारत लौटीं और अपने परिवार तथा परिजनों की स्मृति में तर्पण किया।

कश्मीर की राजौरी घाटी में शरणार्थी बनी मीना पाकिस्तान द्वारा किए गए हजारों हिंदुओं के नरसंहार को कभी भूल नहीं पाईं। उन्होंने उन मृत आत्माओं की शांति के लिए हिंदू परंपराओं के अनुसार पिंडदान को अपने जीवन का एकमात्र उद्देश्य बना लिया। मीना ने यह पिंडदान अपने पुत्र अज्जू के माध्यम से पूरा किया। इस उपन्यास में यह दर्शाया गया है कि कैसे मीना जैसे पात्र विभाजन की त्रासदी को झेलते हुए भी मानवता और करुणा की अद्वितीय मिसाल बने।

विभाजन की पीड़ा और पीढ़ियों का संवाद

भारत लौटने के बाद मीना और अज्जू ने पहली बार खुलकर अपने मन की बात कहने का साहस जुटाया। गया पहुँचने के बाद अज्जू भी सहजता से अपनी माँ के साथ संवाद करने लगा। एक दिन उसने जिज्ञासा से पूछा "अम्मा, क्या विभाजन किसी एक पक्ष की माँग थी?" मीना ने गंभीर स्वर में उत्तर दिया "यह माँग नहीं जिद थी और उसी जिद की सजा, न जाने कितने बेगुनाहों को भुगतनी पड़ी।" पृ36 यह संवाद बताता है कि विभाजन सिर्फ एक राजनीतिक निर्णय नहीं था बल्कि एक हृदयविदारक त्रासदी थी जिसका दंश मासूम और निर्दोष लोगों को झेलना पड़ा।

मीना की व्यथा: विभाजन और कबाइलियों का कहर

मीना अपनी त्रासदी भरी कहानी अपने बेटे को सुनाने में हिचकिचा रही थी फिर भी उसने हिम्मत जुटाकर उसे सुनाई। अगस्त में विभाजन के बाद लगभग पाँच हज़ार कबायली हमलावर कश्मीर में घुस आए। उन्होंने मुज़फ्फराबाद, जम्मू-कश्मीर के कोहाला, छंब-राजौरी,

कोहाट घाटी, रावलपिंडी, सरगोधा, झेलम, गुज्जर ख़ाँ, चक अमरू, बाधा, लाहौर आदि स्थानों पर बर्बर हमले किए।[पृ36] रावलपिंडी से राजौरी पहुँचने के दस दिनों के भीतर ही हमला शुरू हो गया।

मुज़फ्फराबाद पर कब्ज़े के बाद उन्होंने कोटली-बारामूला मार्ग के दोनों ओर बसे गांवों पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया। लूटपाट के बाद बारामूला से उरी तक लारियों में भरकर लौटते समय हिंदू और सिख घरों को पूरी तरह बर्बाद कर दिया गया। उनके घरों को लूटा उन्हें निर्दयता से मार दिया और अंत में घरों को आग के हवाले कर दिया। इस निर्मम कत्लेआम से बचने के लिए लोग अपने शिविरों में छिपे रहते और भगवान से रक्षा की प्रार्थना करते थे।

शाम ढलते ही सब अपने अपने शिविरों में चुपचाप बैठ जाते थे। ठंड से जूझते हुए सर्दियों में भी आग जलाने का साहस नहीं करते थे। अंधेरे में ये शिविर दूर से पहाड़ियों की तरह दिखते थे।[पृ38] सितंबर के अंतिम दिनों में उनका शिविर दो पहाड़ियों के बीच एक सँकरे मैदान में स्थानांतरित कर दिया गया। रात होते ही खाना-पीना निपटाकर हर रोशनी बुझा दी जाती क्योंकि पिछली रात बुद्धल गाँव में लगभग दो-ढाई हज़ार लोगों को कबायली हमलावरों ने बेरहमी से मौत के घाट उतार दिया था।

कबाइलियों का खौफ और मीना का अपहरण

कबाइलियों से बचने के लिए हर रात चार से छह लोगों को गश्त करते हुए इधर-उधर घूमना पड़ता था।[पृ53] उस दिन मीना चुपचाप एक चट्टान पर बैठी हुई थी। जैसे ही अंधेरा हुआ कबाइलियों के आने की हलचल और बंदूकों की गूंज चारों ओर फैलने लगी। कुछ ही देर में पूरा गाँव सन्नाटे में डूब गया। उसके गाँव में कोई भी जीवित नहीं बचा।

अंधकार में कबाइलियों ने मीना को पकड़ लिया और अपने साथ ले गए। उसे यह तक समझ नहीं आया कि वे उसे कैसे अपहरण कर ले गए और कहाँ लेकर जा रहे थे।

साफीखान का अत्याचार और मीना की संघर्षशीलता

रास्ते में एक छोटी पहाड़ी चढ़ते समय साफीखान ने मीना से पूछा "तुमने क्या नाम बताया था?" मीना ने जवाब दिया "मीना।" साफीखान ने तुरंत आदेश दिया "अगर रास्ते में कोई मिले तो अपना नाम मीना नहीं 'अमीना' बताना।" [पृ58]

कुछ समय बाद जब साफीखान ने अचानक छलांग लगाई मीना को पीछे से पकड़ लिया। उसे धमकी दी कि अगर वह उसके साथ नहीं चली तो उसे मार डालेगा। ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी रास्तों पर मीना दौड़ने लगी लेकिन हाथों में बंधी रस्सी के कारण वह बहुत मुश्किल से आगे बढ़ पा रही थी। जब वह पीछे रह जाती तो साफीखान उसे जोर से खींचता जिससे मीना औंधे मुँह गिर पड़ती।

जिन महिलाओं को बलात्कारी जबरन उठा लेते थे उन्हें पशुओं की तरह घसीटते हुए अपने ठिकाने तक ले जाते थे। मीना को भी राजौरी से मीरबेग कैंप तक रस्सी से बांधकर घसीटा गया। रास्ते में थकान और पीड़ा से बेहाल होकर वह मूर्छित हो गई। होश आने पर उसने खुद को एक शिविर में पाया।

साफीखान ने उसे प्रतिशोध की भावना के साथ कहा "अब तुम्हें यहाँ गोश्त वगैरह खिलाकर तुम्हारे शरीर पर भी गोश्त चढ़ा देंगे।" मीना ने भयभीत स्वर में जवाब दिया "मैं नहीं खाती मैं ब्राह्मण हूँ।" पृ59

कश्मीर में धर्म और हिंसा का संकट

हमलावरों ने मुसलमानों को यह विश्वास दिलाया कि वे कश्मीरी मुसलमानों की सहायता के लिए आए हैं। लेकिन इसके बावजूद, आतंकवादियों ने मुस्लिम लड़कियों के साथ भी अमानवीय दुर्व्यवहार किया। कुछ मुसलमानों ने हिंदुओं को अपने घरों में शरण दी लेकिन यदि किसी मुसलमान के घर से हिंदू निकलते हुए देखा जाता तो हमलावर उस मुसलमान के पूरे परिवार को बेरहमी से मार डालते थे। इस दौरान लगभग बाईस हजार हिंदुओं की हत्या कर दी गई। पृ37

कई स्त्रियाँ अपने सम्मान और शीलभंग को सहन न कर पाने के कारण आत्महत्या करने को विवश हो गईं। इस भयानक स्थिति में मानवता और सद्भावना की स्थान पर केवल हिंसा और आतंक का राज था।

आतंक का साया और मीना का संघर्ष

रास्ते में मीना ने भागने की कोशिश की लेकिन उसी क्षण अखबार में पढ़ी एक दिल दहला देने वाली खबर उसकी आँखों के सामने आ गई। आतंकवादियों ने एक माँ और उसकी बेटी का अपहरण कर लिया था। उन्होंने माँ के सामने ही उसकी बेटी की इज्जत लूटी और फिर बेटी के सामने ही माँ का एक-एक अंग काट डाला। अंततः उस बेटी को अर्धनग्न अवस्था में हाथ-पैर बाँधकर उरी बाज़ार के पास सड़क पर फेंक दिया। वह लड़की रोते हुए चिल्ला रही थी "मम्मी, मेरी सलवार बाँध दो।" एक बूढ़ी औरत ने अपनी शॉल देकर उसे ढकने की कोशिश की। लेकिन जैसे ही उसके हाथ-पैर खोले गए वह शर्म और अपमान से पीड़ित होकर पास की झील में कूद गई।

कश्मीर में आतंकवादी हमलों से हिंदू महिलाओं की दुर्दशा बढ़ रही थी जिससे मीना भयभीत और हताश हो गई लेकिन उसका संघर्ष जारी रहा। पृ56

विभाजन के बाद कश्मीर: सामाजिक और आर्थिक त्रासदी

विभाजन के बाद कश्मीर में हिंदू और सिख परिवारों को गहरे सामाजिक और आर्थिक संकटों का सामना करना पड़ा। गरीबी, अशिक्षा और आतंकवाद ने उनके जीवन को अत्यंत

कठिन बना दिया। कई परिवारों ने अपनी बेटियों को आतंकवादियों के चंगुल से बचाने के लिए कठोर कदम उठाए।

कई लोगों को मजबूरी में आतंकवादियों के लिए जासूसी करनी पड़ी और उन्हें बीस-पच्चीस हज़ार रुपये देकर दबाव डाला जाता था। गरीबों को दावत के बहाने मुर्गी और बकरी दी जाती लेकिन बदले में उनकी जवान बेटियों को आतंकवादियों की सेवा में भेजा जाता था।

हिंदू स्त्रियों की शादी तक आतंकवादियों की निगरानी में होती थी। शादी की सूचना उन तक सबसे पहले पहुँचती और वे तुरंत संदेह करते कि विवाह के लिए धन कहाँ से आया। जासूसी का शक कर वे बारातों पर हमला करते और महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार करते। शरीफ घरों की लड़कियाँ भी अपने घरों में सुरक्षित महसूस नहीं करती थीं। आतंकवादी घर के लड़कों को जबरन अपने संगठन में शामिल कर लेते और लड़कियों पर बुरी नज़र रखते।

यह भयावह परिस्थिति न केवल आर्थिक और सामाजिक अस्तित्व को चुनौती दे रही थी बल्कि कश्मीर में मानवता और नैतिकता का विनाश कर रही थी।

विभाजन पर देवसरन की पीड़ा

बूढ़े देवसरन विभाजन की त्रासदी पर अपनी घृणा और पीड़ा व्यक्त करते हुए कहते हैं “पूरा इतिहास उठाकर पढ़ लो, प्राचीन से लेकर आज तक । राजा बदले, सत्ता बदली, एक-दूसरे की पीठ में छुरा घोंपकर राज्य हथियाया गया, पर कभी प्रजा बदली गई हो? ऐसा यह पहली बार हो रहा है। प्रजा की अदला बदला और उसमें भी इतना खून-खराबा शायद इतिहास में पहली बार हो रहा है। पृ48

देवसरन का कहना था कि लोग मुसीबत झेल सकते हैं पर अपनी आदतें छोड़ने को तैयार नहीं होते। वे अपने रोजमर्रा के जीवन का उदाहरण देते हुए कहते थे कि सुबह चाय और अखबार पढ़ना उनकी आदत थी जिसे छोड़ने में वे विवश हो गए।

वे सवाल करते हैं "क्या हम चोरी करके भागे हैं जो मुँह छिपाते फिरें? हम इज्जतदार लोग हैं। बाजार में भी लोग हमारे साथ सहानुभूति से बात करते हैं।" पृ50 उनका यह बयान न केवल विभाजन की त्रासदी को उजागर करता है बल्कि अपने सम्मान और पहचान की रक्षा के संघर्ष को भी दर्शाता है।

मातृत्व और संतान का अनोखा संवाद

महादेवी वर्मा ने कहा है "माँ के चेहरे की झुर्रियों में बेटे की पूरी ज़िंदगी छिपी होती है।" मीना के इकलौते पुत्र अज्जू ने अपनी अम्मा को साहस देते हुए कहा "अम्मी, इस डर का सामना करो–एक सैनिक की तरह, बहादुर फौजी की तरह। तुमने डरते हुए लंबी उम्र गुजार दी।

अब मैं तुम्हारे साथ हूँ। सबकुछ कह डालो। यह समझो कि तुम्हारा बेटा केवल तुम्हारा है तुम्हारे साथ खड़ा है।"[पृ47]

यह केवल एक पुत्र की गूँज नहीं, बल्कि संसार के हर मानव की गूँज है। अज्जू को मीना ने केवल जीवन नहीं दिया बल्कि अपने संकल्प की वेदी पर एक आहुति के रूप में तैयार किया। उनका यह संवाद मातृत्व और संतान के रिश्ते और संघर्षों का सामना करने का संदेश देता है।

युद्ध और प्रेम: मानवता की सीख

युद्धों का परिणाम केवल विनाश और संकट होता है। यह एक खतरनाक लाल रंग की लीला है जिसे कभी नहीं खेलना चाहिए। मानवता को युद्धों से यह सीख लेनी चाहिए कि जो समस्याएँ युद्धों से हल करने की कोशिश की जाती हैं उन्हें समझदारी और संवाद के माध्यम से सुलझाया जाना चाहिए। युद्धों से समस्याओं का समाधान नहीं होता बल्कि वे नई समस्याएँ उत्पन्न करते हैं। [पृ19]

प्रेम ही पृथ्वी पर समता और एकता का मूल मंत्र है। यह मानवता के बीच सत्य, विश्वास और प्रेम से बनती है। प्रेम की कोई सीमा नहीं होती–न कोई धर्म न कोई समय न कोई आयु और न कोई भौगोलिक सीमा। प्रेम सर्वत्र स्वतंत्र रूप से विद्यमान होता है। गोस्वामी तुलसीदास ने भी यही कहा है "नर तनु सम नहिं कंवनिउ देही" अर्थात मनुष्य का शरीर सर्वोत्तम है और उसकी भावना, विचार और कार्य भी श्रेष्ठ होते हैं। यही मानवीय गुण मानवता की सृष्टि करते हैं और यही मानववाद की वास्तविकता है। [पृ18]

निष्कर्ष

महात्मा गांधी का संदेश हमें यह सिखाता है कि मानवता का विश्वास कभी नहीं खोना चाहिए चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी कठिन क्यों न हों। विभाजन की त्रासदी ने मानवता को गहरे घाव दिए हैं लेकिन डॉ. नीरजा माधव के उपन्यास "तेभ्यः स्वधा" के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि केवल मानवता, करुणा और प्रेम ही इस घाव को भर सकते हैं। युद्ध और विभाजन केवल विनाश लाते हैं जबकि प्रेम, सहानुभूति और सहयोग से हम एक बेहतर और समरस समाज की रचना कर सकते हैं। इतिहास से सीखते हुए हमें ऐसा भविष्य निर्माण करना चाहिए जहाँ मानवता सर्वोपरि हो और हम सभी एकजुट होकर एक शांतिपूर्ण और समृद्ध समाज की ओर अग्रसर हो सकें।

संदर्भ सूची

1. डॉ. तेजसिंह, राष्ट्रीय आंदोलन और हिन्दी उपन्यास, शेष सहित्य प्रकाशन,दिल्ली, ISBN-978-81-907311-6-4, पृ 199

2. नीरजा माधव, तेभ्यःस्वधा,विद्य विहार,नई दिल्ली,2022, ISBN-81-88140-34-1, पृ 36
3. वही ------- पृ 38
4. वही ------- पृ 53
5. वही ------- पृ 58
6. वही ------- पृ 59
7. वही ------- पृ 37
8. वही ------- पृ 56
9. वही ------- पृ 48
10. वही ------- पृ 50
11. वही ------- पृ 47
12. बुद्ध प्रकाश, जीवन,प्रेम और संघर्ष, गरीमा बुक्स, दिल्ली, ISBN-978-81-88872-25-1, पृ19
13. वही ------- पृ 18
14. नीरजा माधव, तेभ्यःस्वधा,विद्य विहार,नई दिल्ली,2022, ISBN-81-88140-34-1
15. बृजबाला सिंह, नीरजा माधव सृजन के आयाम,यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन,नई दिल्ली,2015,ISBN: 978-81-7555-728-4

प्रो. एस. प्रसन्ना देवी
शोधार्थी
हिन्दी विभाग
अण्णामलै विश्व विद्यालय
अण्मामलै नगर
चिदंपरम- 608 002

डॉ. एल तिल्लै सेलवी
प्रोफसर
हिन्दी विभाग
अण्णामलै विश्व विद्यालय
अण्मामलै नगर
चिदंपरम - 608 002